Postal Regd. No. :
HP/115/SML/2020-22
< Postage Prepaid >

www.bakhabarconnect.com

शिमला | मंगलवार | 14 - 20 सितम्बर 2022

• वर्ष 9 • अंक 4 • पृष्ठ 4 • साप्ताहिक • मूल्य 1/-
आर.एन.आई. नं. एचपीएमयूएल / 2014/58822

] विचार »

चरित्र आत्म सम्मान की नींव है।

- अज्ञात

बाख़बर कनेक्ट

@bakhabarconnect

कार्रवाई, सरगोशी से शाया होने तक

वनों के विनाश से जलवायु असंतुलन की ओर
2

मुख्यमंत्री ने कुल्लू जिला के बंजार विधानसभा क्षेत्र में 60 करोड़ रुपये की 17 विकासात्मक परियोजनाओं के लोकार्पण और शिलान्यास किये

निशा देवी
कुल्लू . बाख़बर कनेक्ट

मुख्यमंत्री जय राम ठाकुर ने 'प्रगतिशील हिमाचल : स्थापना के 75 वर्ष' समारोहों की कड़ी में बंजार विधानसभा क्षेत्र के मेला ग्राउंड में लगभग 60 करोड़ रुपये की 17 विकासात्मक परियोजनाओं के लोकार्पण और शिलान्यास किए तथा विशाल जनसभा को संबोधित किया। उन्होंने कहा कि हिमाचल प्रदेश के गठन के 75 वर्ष के उपलक्ष्य पर प्रदेश भर में आयोजित किए जा रहे कार्यक्रमों में सरकार को मिल रहे अपार जनसमर्थन से कांग्रेस के नेता बौखला गए हैं। उन्होंने कांग्रेस नेताओं को जवाब देते हुए कहा कि इन समारोहों का राजनीति से कोई लेना-देना नहीं है। ये कार्यक्रम केवल हिमाचल प्रदेश की 75 वर्ष की गौरवमयी यात्रा और इसे देश का अग्रणी राज्य बनाने में योगदान देने वाले सभी लोगों के प्रति आभार व्यक्त करने के लिए ही आयोजित किए जा रहे हैं। उन्होंने कहा कि राज्य के इस गौरवशाली इतिहास का श्रेय प्रदेश के सक्षम नेतृत्व के साथ-साथ राज्य के मेहनती एवं ईमानदार लोगों को भी जाता है।

जय राम ठाकुर ने कहा कि हिमाचल प्रदेश के चहुंमुखी विकास में डॉ. वाई.एस. परमार, राम लाल ठाकुर, शांता कुमार, वीरभद्र सिंह और प्रेम कुमार धूमल सहित सभी मुख्यमंत्रियों का महत्वपूर्ण योगदान रहा है। उन्होंने कहा कि गठन के समय प्रदेश की साक्षरता दर केवल 4.8 प्रतिशत थी, जबकि आज यह 83 प्रतिशत को पार कर गई है। वर्ष 1948 में राज्य में केवल 228 किलोमीटर लंबी सड़कें थीं, जो आज लगभग 40,000 किलोमीटर हो गई हैं। उन्होंने कहा कि भारत रत्न अटल बिहारी वाजपेयी के कार्यकाल में 60,000 करोड़ रुपये के प्रावधान के साथ आरंभ की गई प्रधानमंत्री

शेष पृष्ठ दो पर

राज्यपाल ने हिन्दुस्तान-तिब्बत सीमा पर सैनिकों को राखी बांधी

ललित कश्यप
छितकुल . बाख़बर कनेक्ट

राज्यपाल राजेंद्र विश्वनाथ आर्लेकर ने किन्नौर जिले के अपने दौरे के दूसरे दिन मस्तरांग छितकुल और नागेस्ती स्थित भारत तिब्बत सीमा पुलिस की द्वितीय कोर की चौकियों का दौरा किया। इस अवसर पर राज्यपाल ने गोवा के विभिन्न स्कूलों के बच्चों द्वारा भेजी गई राखियों को स्वयं सैनिकों की कलाईयों पर बांधा तथा बच्चों की ओर से स्नेह एवं प्रेषित संदेश सैनिकों तक पहुंचाए। इस दौरान महिला सैनिकों ने भी राज्यपाल की कलाई पर राखियां बांधी। राज्यपाल ने नागेस्ती चौकी पर सेना के जवानों को भी राखियां बांधी।

अच्छा साहित्य व्यक्तित्व अभिव्यक्ति की क्षमता को बढ़ाता है : प्रो. शंकर

शिमला : शिमला के रोटरी टाउन हॉल में हिमाचल साहित्य संवाद संस्था द्वारा हिमाचल प्रदेश विश्वविद्यालय हिन्दी विभाग तथा कला भाषा संस्कृति अकादमी के संयुक्त तत्वावधान में स्वतन्त्रता के अमृत महोत्सव पर हिंदी दिवस एवं भारतेन्दु हरिश्चन्द्र जयंती के अवसर पर एक संगोष्ठी का आयोजन किया गया। प्रो. शंकर ने कहा कि महान साहित्य पढ़ना अपने व्यक्तिगत जीवन और पूर्वजों की ख्याति को आगे बढ़ाने का कार्य है। उन्होंने कहा कि अच्छा साहित्य न केवल वैचारिकता को बढ़ाता है बल्कि व्यक्तित्व व अभिव्यक्ति की क्षमता को भी बढ़ाता है। उन्होंने कहा कि प्रसिद्ध साहित्यकार निर्मल वर्मा के शब्दों में अच्छा साहित्य पढ़ना जीवन को गति प्रदान करता है। कार्यक्रम में विशिष्ट अतिथि के रूप में उपस्थित हिन्दी विभाग प्रमुख डॉ पान सिंह, डॉ शोभा व अकादमी के सचिव डॉ कर्मसिंह ने भारतेन्दु हरिशचंद्र के साहित्य में ओत प्रोत राष्ट्रीयता की भावना व कवियों और साहित्यकारों के देश की स्वाधीनता में दिये गये योगदान को याद किया। कार्यक्रम का संचालन हि.प्र वि.वि. की डॉ प्रियंका वैद्य ने किया। इस अवसर पर राष्ट्रीय स्वयंसेवक संघ के प्रान्त प्रचार प्रमुख महीधर प्रसाद, हि.प्र. वि.वि. के प्राध्यापक और विद्यार्थी उपस्थित रहे।

हम मजबूत होकर प्रदेश का सियासी रिवाज बदलेंगे : रश्मिधर सूद

देवेन्द्र कश्यप
शिमला . बाख़बर कनेक्ट

मुख्यमंत्री जयराम ठाकुर आज प्रदेश में करोड़ों रुपए के विकास कार्य करवाकर हिमाचल को आगे बढ़ाने का काम कर रहे हैं तो कांग्रेस को तकलीफ हो रही है। हिमाचल प्रदेश महिला मोर्चा की राज्य अध्यक्ष एवं पर्यटन निगम की उपाध्यक्ष रश्मिधर सूद ने कांग्रेस पर यह आरोप लगाए हैं। वे शुक्रवार को कोटखाई में महिला सम्मेलन को संबोधित कर रही थी।

उन्होंने कहा कि हिमाचल प्रदेश में मुख्यमंत्री जयराम ठाकुर के सफल नेतृत्व में हर क्षेत्र में विकास हुआ है और महिलाओं के कल्याण के लिए, अनेक योजनाएं चलाई गई हैं। केंद्र व प्रदेश में कांग्रेस की सरकारें रही महिलाओं के लिए कुछ भी नहीं कर पाई, जो आज प्रधानमंत्री नरेंद्र मोदी व जयराम ठाकुर के नेतृत्व में किया जा रहा है। रश्मिधर सूद ने कहा कि महिलाएं लगातार सशक्त होकर आगे बढ़ रही हैं। भारतीय जनता पार्टी का नेतृत्व व सरकार महिलाओं के कल्याण के लिए नीतियां बनाकर के आगे बढ़ रहा है। उन्होंने कहा कि हम मजबूत होकर प्रदेश का सियासी रिवाज बदलेंगे जिसमें भाजपा रिपीट करेगी और इसमें महिलाओं की अहम भूमिका रहेगी।

हिमाचल प्रदेश मंत्रिमण्डल के निर्णय : गिरीपार क्षेत्र के हाटी समुदाय को अनुसूचित जनजाति का दर्जा देने के लिए भाजपा के राष्ट्रीय नेतृत्व का जताया आभार

बाख़बर न्यूज
शिमला . बाख़बर कनेक्ट

मुख्यमंत्री जय राम ठाकुर की अध्यक्षता में हुई राज्य मंत्रिमंडल की बैठक में सिरमौर जिले के गिरीपार क्षेत्र के हाटी समुदाय को अनुसूचित जनजाति का दर्जा देने के लिए केंद्र सरकार और विशेष तौर पर प्रधानमंत्री नरेंद्र मोदी, गृह मंत्री अमित शाह और भाजपा के राष्ट्रीय नेतृत्व के प्रति आभार व्यक्त किया गया। हाटी समुदाय का यह मुद्दा वर्ष 1967 से लंबित था।

मंत्रिमंडल ने 12 वर्ष की निरंतर सेवा पूर्ण कर चुके अंशकालिक पंचायत चौकीदारों को दैनिक वेतनभोगी पंचायत कर्मचारी बनाने का निर्णय लिया। मंत्रिमंडल ने संविधान निर्माता बाबा साहेब डॉ. भीम राव अंबेडकर के सम्मान में हर जिले में एक कॉलेज के पुस्तकालय का नाम बदलकर डॉ. भीम राव अम्बेडकर जिला पुस्तकालय करने का निर्णय लिया। बैठक में मण्डी जिले की अस्थायी पुलिस चौकी लड़भड़ोल को पुलिस थाने के रूप में स्तरोन्नत करने और विभिन्न श्रेणियों के 8 पद सृजित करने तथा इन्हें भरने को मंजूरी प्रदान करने का निर्णय लिया गया। मंत्रिमंडल ने मण्डी जिले

की पुलिस चौकी पंडोह को भी पुलिस थाने में स्तरोन्नत कर इसमें विभिन्न श्रेणियों के 8 पद सृजित करने तथा इन्हें भरने को मंजूरी प्रदान की। बैठक में शिमला जिले के सुन्नी में नया उपमंडल अधिकारी (नागरिक) कार्यालय खोलने को भी स्वीकृति दी गई। मंत्रिमंडल ने सोलन जिला के रामशहर में नया खण्ड विकास अधिकारी कार्यालय खोलने और विभिन्न श्रेणियों के 14 पदों के सृजन व भरने का निर्णय लिया।

मंत्रिमंडल ने शिमला जिले के नेरवा के गांव लखावटी में फल आधारित वाइनरी प्लांट स्थापित करने के लिए मैसर्स साइडर मिल्स प्राइवेट लिमिटेड के पक्ष में आशय पत्र जारी करने का निर्णय लिया। इसके अलावा फल आधारित वाइनरी प्लांट स्थापित करने के लिए मैसर्स हिमाचल नेक्टर्स प्राइवेट लिमिटेड यूनिट नंबर 2 प्लाट नंबर-1 औद्योगिक क्षेत्र बनालगी तहसील कसौली, जिला सोलन के पक्ष में आशय पत्र जारी करने के लिए भी मंत्रिमंडल ने मंजूरी प्रदान की।

बैठक में जिला चंबा के चुराह विधानसभा क्षेत्र के शैक्षणिक खंड कल्हैल के अंतर्गत ग्राम पंचायत चांजू के गांव भटियोटा, इसी खंड की ग्राम पंचायत ससौरगढ़ के गांव बुरिल्ला और चुराह विधानसभा क्षेत्र के ही शैक्षणिक खंड कियाणी के अंतर्गत ग्राम पंचायत कुठेड़ के गांव खंडीरका में प्राथमिक विद्यालय खोलने का निर्णय लिया गया।

. बाख़बर कनेक्ट .

[सम्पादकीय]

ऊर्जा और परिवहन की मांग

वैश्विक अर्थव्यवस्था में विकास के साथ ऊर्जा और परिवहन की मांग बढ़ रही है। ब्रिक्स देशों का विकास हो रहा है और चीन तथा भारत आज अपनी बढ़ती अर्थव्यवस्थाओं को टिकाऊ बनाए रखने के लिए उच्चस्तरीय ईंधन का उपयोग कर रहे हैं। भारत में कुल मिलाकर ऊर्जा की आवश्यकता वर्ष 2031-32 तक 1433 मिलियन टन तेल के समतुल्य हो जायेगी जो 2.6 गुना वृद्धि होगी। परिवहन क्षेत्र में फिलहाल 86 मिलियन टन तेल के समतुल्य ऊर्जा की खपत होती है, जो ऊर्जा खपत का लगभग 16 प्रतिशत भाग है।

वर्ष 2031-32 तक इसके 360 मिलियन टन तेल के समतुल्य तक बढ़ने की संभावना है और तब यह कुल ऊर्जा खपत का 25 प्रतिशत हो जायेगा। परिवहन क्षेत्र का विकास 4.2 गुना हो जायेगा। परिवहन क्षेत्र में वर्ष 2011-12 में 57 प्रतिशत तेल की खपत हुई और वर्ष 2031-32 तक इसके 73 प्रतिशत तक बढ़ने की संभावना है। परिवहन के लिए लगभग 97 प्रतिशत ईंधन पेट्रोलियम पर आधारित है और शेष 03 प्रतिशत भाग में सीएनजी, बायो-ईंधन और बिजली का बराबर हिस्सा है। मौजूदा संकेतों के अनुसार यही समीकरण 2031-32 तक भी जारी रहने वाला है। यदि हम परिवहन क्षेत्र में खपत प्रणाली की ओर ध्यान दें तो सड़क पर चलने वाली सवारियां तेल के 93 प्रतिशत भाग की खपत करती हैं, रेलवे और हवाई सेवा में प्रत्येक में 3 प्रतिशत और जल मार्ग में शेष 1 प्रतिशत की खपत होती है।

भारतीय रेलवे ने आरडीएसओ में डीजल ईंधन के लिए 20 प्रतिशत जैव डीजल का पहले ही सफल प्रयोग कर लिया है। शकूर बस्ती, खड़कपुर, पैरंबुर जैसी बहुत सी इकाइयों में बी-5/बी-10 के साथ फील्ड परीक्षण कर लिए गए हैं। इन इकाइयों में प्रति दिन 2000 लीटर क्षमता वाले जैव डीजल उपयोग करने वाले लघु संयंत्र लगाए गए हैं। रेलवे ने रेल पटरियों के साथ-साथ जटरोफा पौधे भी लगाने का प्रयास किया था, जो ज्यादा सफल नहीं रहा।

॥ प्रथम पृष्ठ के शेष >

मुख्यमंत्री ने . . .

ग्राम सड़क योजना हिमाचल के लिए वरदान साबित हुई है। प्रदेश में लगभग 51 प्रतिशत सड़कों का निर्माण इसी योजना के माध्यम से किया गया है। बंजार जैसे दूरदराज क्षेत्रों में भी पीएमजीएसवाई के कारण ही सड़कों का निर्माण संभव हुआ है तथा इससे प्रदेश के विकास के लिए एक मजबूत आधार तैयार हुआ है।

मुख्यमंत्री ने कहा कि वर्तमान प्रदेश सरकार को लगभग दो वर्षों तक वैश्विक महामारी कोरोना के दौरान कार्य करने की चुनौती से भी जूझना पड़ा। जय राम ठाकुर ने कहा कि उनसे पहले के पांच मुख्यमंत्रियों को ऐसी चुनौतीपूर्ण परिस्थितियों का सामना नहीं करना पड़ा। उन्होंने कहा कि तमाम चुनौतियों के बावजूद प्रदेश सरकार ने हिमाचल का विकास थमने नहीं दिया। प्रदेश सरकार ने कोरोना संकट के दौरान देश के विभिन्न हिस्सों में फंसे 2.50 लाख से अधिक लोगों को सकुशल घर पहुंचाया और देश में सबसे पहले शत-प्रतिशत आबादी का कोरोना रोधी टीकाकरण सुनिश्चित किया।

जय राम ठाकुर ने कहा कि इस वर्ष दिहाड़ीदारों की दिहाड़ी में 50 रुपये प्रतिदिन की वृद्धि की गई है तथा पैरा वर्कर के मानदेय में रिकॉर्ड वृद्धि कर उन्हें राहत प्रदान की गई है। उन्होंने कहा कि पिछली कांग्रेस सरकार द्वारा विभिन्न श्रेणियों को सामाजिक सुरक्षा पेंशन प्रदान करने पर 400 करोड़ रुपये व्यय करने की तुलना में वर्तमान प्रदेश सरकार 1300 करोड़ रुपये से अधिक व्यय कर रही है। उन्होंने कहा कि मुख्यमंत्री गृहिणी सुविधा योजना के तहत ज़रूरतमंद परिवारों को 3.35 लाख नि:शुल्क गैस कनैक्शन और गंभीर रूप से बीमार रोगियों के परिवार को प्रति माह 3000 रुपये की आर्थिक सहायता प्रदान की जा रही है।

जहां थोड़े से पेड़ हैं या जहां प्राकृतिक वनों को नष्ट करने के बाद व्यापारिक महत्व के विदेशी प्रजाति के पेड़ लगाए गए हैं, उन्हें भी वन क्षेत्र के रूप में गिन लिया जाता है। क्या यह उचित है? प्राकृतिक वनों में मिश्रित प्रजातियों के पेड़ घने रूप में होते हैं व इनके नीचे तरह-तरह के छोटे पेड़-पौधे, झाड़ियां व घास खूब पनपते हैं। इस माहौल में बहुत तरह के पशु-पक्षियों, कीट-पतंगों के लिए अनुकूल वातावरण मिलता है। इन पेड़-पौधों के नीचे की मिट्टी बहुत उपजाऊ व सजीव होती है, जिसमें लाखों तरह के सूक्ष्म जीव पनपते हैं। इन मिश्रित प्राकृतिक वनों में जैव-विविधता संजोने और कार्बन डाई आक्साइड सोखने की अद्भुत क्षमता होती है।

वनों के विनाश से जलवायु असंतुलन की ओर

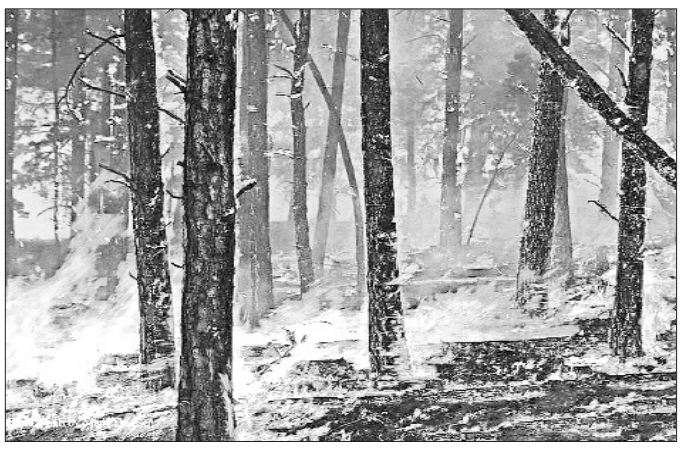

वैसे तो पर्यावरण रक्षा में वनों की महत्वपूर्ण भूमिका को हमेशा स्वीकार किया गया है, पर जलवायु बदलाव के बढ़ते खतरे के मद्देनजर कार्बन डाई आक्साइड सोखने की अपनी भूमिका के कारण उनका महत्व और भी बढ़ गया है। चिंता की बात यह है कि इसके बावजूद वनों के विनाश में कमी नहीं आई है। अनुमान है कि पिछले एक दशक में ही पूरे विश्व के वन क्षेत्र में लगभग चार लाख वर्ग किमी. की कमी आई है। विश्व स्तर पर ब्राजील और इंडोनेशिया जैसे कुछ देशों में वनों का विनाश व्यापक चिंता का विषय बना है, जबकि कुछ विकसित देशों के बारे में माना जाता है कि उन्होंने इसकी सुरक्षा के लिए जरूरी कदम उठा लिए हैं।

पर यदि यह देखा जाए कि ये विकसित देश लकड़ी का बड़े पैमाने पर आयात कहां से करते हैं, तो स्पष्ट हो जाएगा कि गरीब देशों में वनों का विनाश इन विकसित देशों की मांग की आपूर्ति के लिए ही हो रहा है। भारत जैसे विकासशील देशों के बारे में प्राय: यह माना जाता है कि यहां के वन व पर्यावरण विभाग काफी सक्रिय हैं और यहां जंगलों की स्थिति कुल मिलाकर ठीक-ठाक है। सरकारी आंकड़े भी यही बताते हैं। यदि इन्हें सच माना जाए जो भारत के वन आ%छादित क्षेत्र में वर्ष 1997-2007 के बीच 0.5 प्रतिशत प्रतिवर्ष की वृद्धि हुई।

मगर स्वतंत्र अनुसंधानकर्ता इन सरकारी आंकड़ों को चुनौती देते रहे हैं। इस चुनौती का एक मुख्य आधार यह रहा है कि सरकारी आंकड़ों में वनों को बहुत संकीर्ण ढंग से परिभाषित किया जाता है।

जहां थोड़े से पेड़ हैं या जहां प्राकृतिक वनों को नष्ट करने के बाद व्यापारिक महत्व के विदेशी प्रजाति के पेड़ लगाए गए हैं, उन्हें भी वन क्षेत्र के रूप में गिन लिया जाता है। क्या यह उचित है? प्राकृतिक वनों में मिश्रित प्रजातियों के पेड़ घने रूप में होते हैं व इनके नीचे तरह-तरह के छोटे पेड़-पौधे, झाड़ियां व घास खूब पनपते हैं।

इस माहौल में बहुत तरह के पशु-पक्षियों, कीट-पतंगों के लिए अनुकूल वातावरण मिलता है। इन पेड़-पौधों के नीचे की मिट्टी बहुत उपजाऊ व सजीव होती है, जिसमें लाखों तरह के सूक्ष्म जीव पनपते हैं। इन मिश्रित प्राकृतिक वनों में जैव-विविधता संजोने और कार्बन डाई आक्साइड सोखने की अद्भुत क्षमता होती है। इन वनों में बाढ़ को रोकने तथा विभिन्न प्रकार के पौष्टिक खाद्य व जड़ी-बूटियां देने की पर्याप्त क्षमता होती है। जल-संरक्षण में इनका काफी योगदान होता है।

दूसरी ओर व्यापारिक प्रजातियों के मोनोकल्चर या मुख्य रूप से एक ही पेड़ के बड़े क्षेत्र में किए गए प्लांटेशन प्राकृतिक वनों जैसी बहुपक्षीय भूमिका निभाने में असमर्थ होते हैं। विदेशी प्रजातियों के मोनोकल्चर तो और भी हानिकारक सिद्ध हुए हैं, क्योंकि वे किसी अन्य स्थिति के लिए उपयोगी थे, यहां उन्हें जबरदस्ती प्रवेश दिला दिया गया है। यूकेलिप्टस के प्लांटेशन अपनी जल सोखने की क्षमता के लिए जाने जाते थे, पर उन्हें ऐसे क्षेत्रों में भी लगा दिया गया जहां पानी का संकट है। इस तरह जल-संरक्षण करने की जगह उनकी भूमिका जल-संकट बढ़ाने की हो गई। वैसे भी प्लांटेशन का मुख्य उद्देश्य तेजी से बढ़ने वाले पेड़ लगा कर उन्हें एक निश्चित अवधि में काटना होता है। अत: प्लांटेशन को स्थायी हरियाली नहीं मान सकते।

इसलिए वन-आच्छादित क्षेत्र के सही अनुमान लगाने के लिए इस तरह के प्लांटेशन को उसमें शामिल नहीं करना चाहिए। यदि इन प्लांटेशन क्षेत्रों को हटाकर उपलब्ध आंकड़ों का आकलन किया जाए तो पता चलता है कि भारत के प्राकृतिक वन प्रति वर्ष लगभग 2.1 प्रतिशत की दर से कम हो रहे हैं। 0.5 प्रतिशत की दर से वार्षिक वृद्धि होने के दावे की जगह अगर यहां के वन क्षेत्र में 2.1 प्रतिशत की दर से कमी हो रही है, तो यह बहुत बड़ा फर्क है। इसलिए यह बहुत जरूरी है कि वनों की वास्तविक स्थिति की समझ देश में बनाई जाए और उनके अनुकूल जरूरी कदम उठाए जाएं। इसके लिए वन-विभागों व अधिकारियों के दृष्टिकोण में भी बदलाव करने की जरूरत है।

हमारी मौजूदा वन-नीति के एक और पक्ष पर गौर करने की जरूरत है। हिमालय के संदर्भ में कभी गांधीजी की शिष्या मीरा बहन ने वन-अधिकारियों से एक महत्वपूर्ण बहस चलाई कि किस तरह चीड़ (पाइन) जैसे शंकुधारी पेड़ों को महत्व देने से चौड़ी पत्ती वाले बांज (ओक) जैसे पेड़ हाशिए पर चले गए। चीड़ से लुगदी और लीसा मिलता था, इसलिए इसका व्यापारिक महत्व बढ़ गया। पर गांववासियों के पशुपालन, जल व मिट्टी संरक्षण की दृष्टि से बांज जैसे चौड़ी पत्ती के पेड़ ही अधिक उपयोगी थे। इस तरह वनों का चरित्र बदलने से गांववासियों से वनों के संबंध में भी बदलाव आने लगा और उनके मन से अपने वनों की रक्षा की भावना कमजोर होने लगी। इसलिए जब वनों की रक्षा की बात की जाती है, तो मिश्रित प्राकृतिक वनों की रक्षा का विशेष ध्यान रखना चाहिए। आज अधिकांश घने प्राकृतिक वन आदिवासी बहुल क्षेत्रों में ही बचे हैं। उन्होंने हजारों वर्षों तक इन वनों का उपयोग अपनी जीवन शैली के अनुकूल किया और वे नष्ट नहीं हुए। पर अब कोई एक खनन परियोजना एक ही झटके में पूरा वन उजाड़ देती है। चिपको आंदोलन के दौरान 200 से 300 पेड़ों के कटान को रोकने के लिए भी आंदोलन होता था, चर्चा होती थी, पर अब कई परियोजनाओं के लिए एक लाख या उससे भी अधिक पेड़ कट जाते हैं और उस क्षेत्र के बाहर किसी को खबर भी नहीं होती।

जिन वन-क्षेत्रों की कटाई पहले वर्जित मानी गई थी, आज वहां भी इसकी स्वीकृति दी जा रही है। जहां खनन जैसे कार्य प्रतिबंधित थे, वहां से भी प्रतिबंध हटाए जा रहे हैं। इन प्रवृत्तियों के पीछे मूल बात यही है कि पर्यावरण पर पैसा और संरक्षण पर सौदेबाजी हावी है। लेकिन वनों के बहुपक्षीय महत्व को रेखांकित करते हुए हमें वन-विनाश पर रोक लगानी ही होगी।

लोरेटो कॉन्वेंट ताराहॉल में मनाया वार्षिकोत्सव

अजय कश्यप

शिमला . बाख़बर कनेक्ट

लोरेटो कॉन्वेंट ताराहॉल में वार्षिकोत्सव का आयोजन किया गया। इस आयोजन में 'द विज़र्ड ऑफ ओज़' नामक नाटक का मंचन किया गया। इस दौरान अर्की महाविद्यालय से सेवानिवृत प्राचार्य डॉ. उषा बांदे ने बतौर मुख्यातिथि शिरकत की। डॉ. बांदे का साहित्य के क्षेत्र में विशेष योगदान रहा है। इस कार्यक्रम की मुख्य विशेषता यह रही कि विद्यालय में पढ़ने वाली छठी से दसवीं कक्षा तक की प्रत्येक छात्रा ने मंच पर प्रस्तुति दी। कार्यक्रम में नृत्य नाटक तथा संगीत का अद्भुत मेल देखने को मिला। नाटक का सफल मंचन रितु शर्मा, रचना शर्मा, प्रीति, बलदेव सिंह तथा नेहा नेगी के कुशल निर्देशन में हुआ। नृत्य तथा संगीत की शानदान प्रस्तुतियां तैयार करने में नीना सूद तथा नरेंद्र कुमार का विशेष सहयोग रहा। विद्यालय की भाषणपटु वक्ता रचना शर्मा द्वारा मंच संचालन किया गया। मंच की सजावट में रीना गौतम का योगदान सराहनीय रहा। पावर प्वाइंट प्रस्तुति दिनेश ठाकुर के सौजन्य से सम्पन्न हुई। मुख्यातिथि ने छात्राओं द्वारा प्रस्तुत नाटक को खूब सराहा। नाटक में मुख्य भूमिका प्रदन्या, स्वरांजलि, काशवी, सानवी, हरलीन, जिया, अदविती, आर्याही, नव्या, अरूंधति, समायरा, शांभवी, यशिका, सानवी आदि ने निभाई। कार्यक्रम के अंत में प्रधानाचार्य ने विद्यार्थियों के प्रयास की सराहना की और इसी तरह मेहनत के बल पर आगे बढ़ने की नसीहत दी।

نیوزی لینڈ کا 18 کروڑ سال پرانا جنگل جس کے درخت 'پتھر' بن چکے ہیں

'ایج آف سیل' اس زمانے کو کہا جاتا ہے جب 16ویں سے 19ویں صدی کے دوران بحری جہاز ہی تجارت، جنگ، یا آمد و رفت کا اہم طریقہ تھے۔ یہ وہ دور تھا جس میں بحری طاقت ہی قوموں کی ترقی کی عکاسی تھی۔

آپ ایک گلوب لیں اور زمین کے لونگیٹیوڈ (طول البلد) 170 پر جائیں۔ اپنی انگلی کو اس لائن کے متوازی نیچے کی طرف لے جائیں تو جس خطے کو آپ دیکھ رہے ہوں گے، اس علاقہ کا نام اس دور میں 'رورنگ فورٹیز' رکھا گیا تھا۔

'رورنگ فورٹیز' کا نام رکھنے کی وجہ یہ تھی کہ اس علاقے میں انتہائی شدید ہوائیں مغرب کی جانب سے چلا کرتی تھیں۔ جنوبی بحرالکاہل کے اسی علاقے میں آپ کو نیوزی لینڈ کے قدیم جزیرے ملیں گے۔

زمین کے دور دراز ملک ہونے کی وجہ سے اس علاقے میں ایک عجیب سی کشش ہے۔ میں نیوزی لینڈ کے جنوبی جزیرے میں سفر کر رہا تھا، جسے کیٹلنز کہتے ہیں، جہاں انٹارکٹیکا کی سرد ہوائیں کیوی ساحلی پٹی پر جیسے جادو کرتی ہیں۔

اس 100 کلومیٹر طویل پٹی کے راستے دشوار گزار ہیں اور یہاں بڑے بڑے حجم کے سمندری غار اور پتھروں کے ناہموار ڈھیر موجود ہیں۔ یہاں پر گھنے جنگلات بھی ہیں جن میں دیو مالائی کہانیوں جیسی آبشاریں ہیں جہاں پرندے چہچہا کر اپنی موجودگی کا احساس دلاتے ہیں۔

ساحل کے اس خم کے اندر نیوزی لینڈ کی جائے پیدائش کی جانب اشارہ موجود ہے۔ یہ جادوئی زمین کی تزئین کیریو بے کے قدیم ارضیاتی رجحان کا گھر ہے، جو دنیا کے نایاب ترین جنگلات میں سے ایک ہے۔

تقریباً 180 ملین سال پہلے جراسک دور کے دوران، کیوریو بے کا علاقہ براعظم گونڈوانا کے مشرقی حاشیے کا حصہ تھا، جو آسٹریلیا اور انٹارکٹیکا سے جڑا ہوا تھا جبکہ مستقبل کا بیشتر نیوزی لینڈ لہروں کے نیچے ہی تھا۔ یہ وہ وقت تھا جب یہ وسیع و عریض خطہ ایک ساحلی سیلابی میدان سا تھا جسے آتش فشاں پہاڑوں نے گھیر رکھا تھا۔ ان آتش فشاں پہاڑوں سے اگلتا ہوئی راکھ مسلسل جنگلات کو تباہ کرتی رہی۔ کیچڑ سے اٹے، آکسیجن سے محروم اور آتش فشاں کی راکھ سے بھرے سیلابی پانی میں گھرے ہوئے درختوں کے تنے رفتہ رفتہ پتھر بن گئے۔

'تحلیل شدہ سلیکا سے بھرا ہوا مائع دفن شدہ لکڑی میں گھس جاتا، پھر لکڑی کے خلیوں کے اندر ٹھوس ہو جاتا۔' نیوزی لینڈ کے ماہر ارضیات، ماہر ارضیات اور ماہر نباتات، ڈاکٹر مائیک پول نے وضاحت کی۔ 'ان خالی جگہوں میں حتمی نتیجہ لکڑی کا مکمل طور پر بدل جانا ہوتا، اکثر بنیادی خلیے کی سطح تک۔'

پچھلے 10,000 برسوں میں، یہاں کا سمندر کسی ماہر آثار قدیمہ کی طرح دبے ہوئے جنگل کو تھوڑا تھوڑا کر کے بے نقاب کر رہا ہے اور مٹی اور ریت کے پتھر کی تہوں کو کھرچ رہا ہے۔

جو چیز کیوریو بے کو منفرد بناتی ہے وہ آتش فشاں راکھ سے بھرے سیلابی پانیوں سے گرنے کی وجہ سے جنگل کی افقی پوزیشن ہے، جبکہ دیگر - جیسے ایریزونا کا پیٹریفائیڈ فارسٹ اور سوالبارڈ کا اشنکٹبندی فوسل جنگل - عمودی ہیں۔ یہ دنیا کے ان چند ایسے مقامات میں سے ایک ہے جہاں تک رسائی ممکن ہے۔

نیوزی لینڈ جیولوجیکل سروے کے مطابق، 'جراسک دور کے معروف فوسل جنگلات پوری دنیا میں بہت کم ہیں اور یہ ان سب میں سب سے زیادہ متنوع اور قابل ذکر ہے۔'

مزید برآں، جب کہ زیادہ تر پتھر ہو جانے والے جنگلات کسی جدید جنگل سے بہت دور ہیں، کیوریو بے کے پیٹریفائیڈ جنگل میں، جو سائیکڈس، گنکوز، کونیفرز اور فرنز کے قدیم گونڈوانا جنگل کی نمائندگی کرتا ہے، اس کی نسلیں اب بھی موجود ہیں۔

نیوزی لینڈ کے تقریباً 80 فیصد درخت، فرنز اور پھولدار پودے مقامی ہیں جو لاکھوں سال سے تنہائی میں اگے ہیں۔ یہاں منفرد جنوبی نصف کرہ کونیفرز کے جنگلات ہیں، جنہیں پوڈوکارپ کہا جاتا ہے، جن کی انواع میں ریمو، تو تارا، ماتائی، کاہیکاٹی اور میرو شامل ہیں، جن کا سلسلہ گونڈوانا تک پھیلا ہوا ہے۔ ویلنگٹن، نیوزی لینڈ کی وکٹوریہ یونیورسٹی میں ارضیات کی تعلیم مکمل کرتے ہوئے، ڈاکٹر ونیسا تھورن نے یہ نتیجہ اخذ کیا کہ اپنی اصل نشوونما کی پوزیشن میں محفوظ یہ فوسل جنگل نایاب ہے۔

فوسل جنگل کا اس کے اصل ماحول میں مطالعہ کرنے کے لیے، جہاں اسے ایک ارضیاتی لمحے میں آتش فشاں نے دفن کر دیا تھا، اس کے قدرتی ماحولیاتی نظام کے بارے میں زیادہ بصیرت فراہم کرتا ہے۔

تھورن کا خیال ہے کہ جب نیوزی لینڈ گونڈوانا کے انٹارکٹک مارجن سے جڑا ہوا تھا، یہ جنگل 'قطبی دائرے کے اندر' تقریباً 75-78°S پر بڑھ رہا تھا۔

موجودہ دور کے کوری اور ریمو درختوں کے آباؤ اجداد طویل، سیاہ سردیوں اور مسلسل دھوپ والی گرمیوں کے درمیان تیزی سے بدل سکتے تھے۔

'یہ موجودہ وقت سے بہت بڑا فرق ہے۔ اب کوئی درخت ایسا نہیں کر سکتا۔' یہ معمہ کیوریو بے کی انفرادیت اور سائنسی اہمیت میں اضافہ کرتا ہے۔

اپنی جغرافیائی تنہائی اور غذائیت سے بھرپور پانیوں کی وجہ سے، کیٹلنز ساحل نیوزی لینڈ کے فرسیل، جنوبی ہاتھی نما سیلز اور مقامی Hookers یا سمندری شیروں کے لیے ایک غیر معمولی سمندری جنگلی حیات کی پناہ گاہ فراہم کرتا ہے۔

اس علاقے میں دنیا کی نایاب ترین اور سب سے چھوٹی ہیکٹر کی ڈولفن اور دنیا کی نایاب ترین پینگوئن نسلیں، پیلی آنکھوں والی ہوئیہو، بھی پائی جاتی ہیں۔

میرے شمال میں پور پوز بے ہے، جہاں ہیکٹر ڈولفن مقامی سرفرز کے ساتھ سمندر کی لہروں میں کھیل رہی تھیں۔ کیوریو بے کا چٹانی پلیٹ فارم میرے جنوب کی طرف تھا۔

جغرافیہ کے ایک سابق استاد اور ارضیات کے ماہر کے طور پر، ایک خوفناک جنگل کی موجودگی میں ہونا مقدس گریل کو تلاش کرنے کے مترادف تھا۔

جیسے ہی میں نے سمندر کی طرف دیکھا، میں نے زمین کے نیچے موجود ٹیکٹونک پلیٹوں کی حرکت کا جواب دیتے ہوئے پانی کے بڑھنے اور گرنے، زمین کو ڈھانپنے اور پیچھے ہٹنے کا تصور کیا جب نیوزی لینڈ آہستہ آہستہ بن رہا تھا۔ میں نے اپنے پیچھے موجود آتش فشاں اور اس نوجوان جنگل کی قسمت کا تصور کیا جسے آخری بار پرتشدد طریقے سے گرنا تھا، اور سمندر اس پر دوبارہ دعوی کرنے کے لیے اٹھ رہا تھا۔

میں یہاں سونامی کی وارننگ کا نشان دیکھ کر گھبرا گیا۔ یہ ارضیاتی پہیلی کا ایک اور ٹکڑا تھا۔

نیوزی لینڈ کا ملک آتش فشاں، جیوتھرمل اور زلزلہ زدہ زون کے کنارے پر موجود ہے جسے 'رنگ آف فائر' کے نام سے جانا جاتا ہے۔ آج بھی یہاں تباہ کن زلزلے آتے ہیں اور آتش فشاں پھٹتے ہیں، بلکل ویسے ہی جیسے کہ اس وقت ہوا کرتا تھا جب کیوریو بے کا فوسل جنگل بنا۔

میں کیوریو بے کے نظارے والے راک پلیٹ فارم پر دیگر فوسل کے شوقین افراد کے ساتھ شامل ہو گیا۔

ساحلی ہوا کے جھونکے سے میں نے اس ارضیاتی رجحان کی پہلی جھلک دیکھی۔ میرے سامنے سینکڑوں پیٹریفائیڈ تنے پھیلے ہوئے تھے۔ ایک جنوبی نصف کرہ کا Pompeii تھا جس کو گونڈوانا آتش فشاں کے دھماکے اور راکھ نے زمین بوس کر دیا تھا۔

پلیٹ فارم کے کنارے پر لہریں اٹھیں اور تیز ہو گئیں۔ میں ان تنوں پر بیٹھا جو چھوٹے چھوٹے آتش فشاں لگ رہے تھے۔

ان کے چھوٹے کریٹرز کے اندر، میں نے رنگ میں ایک الگ تبدیلی دیکھی۔ چٹان کے پلیٹ فارم کے سرمئی ریت کے پتھر کے برعکس، یہ گڑھے کیچڑ کے نارنجی رنگ کے تھے اور پتھر میں دائرے بنے ہوئے تھے۔ میں جراسک ٹری رنگز میں ماضی کو دیکھ رہا تھا۔

میں نے درخت کی انگوٹھیوں کو گن کر ان کا سراغ لگایا اور اپنی انگلیاں سجدے میں گرے پتھر کے تنوں کی ترامیل لکیروں کے ساتھ دوڑائیں اور چھال کی ساخت کو محسوس کیا۔ کچھ تنے ریل کی پٹریوں کی طرح سمندر کی طرف جا رہے تھے اور چند زاویوں سے آڑھی ترچھی لکیریں بنا رہے تھے۔

یہ قدیم جنگل اب ریت سے بھرے پتھریلے پانی کے چھوٹے تیلابوں اور جو کی رنگت والے نیچیون ہار میں گھرا ہے۔ نیچیون ہار مقامی سمندری بوٹی ہے جس کا نام سر جوزف بینکس پر رکھا گیا جنھوں نے 1763 میں کیپٹن کک کے ساتھ ایچ ایم ایس اینڈیور نامی جہاز میں Pacific کی مہم میں حصہ لیا تھا۔

یہاں حال ہی میں ایک معلوماتی مرکز بنایا گیا ہے جہاں بڑی سکرینز اور فلم کے ذریعے کیوروبے کی تشکیل کے خیالاتی مناظر دکھائے جاتے ہیں جس میں اس وقت کا تصور کیا گیا ہے جب گووانڈا کے براعظم الگ ہوئے اور جراسک دور کا آغاز ہوا۔

آج کی وہیلز اور ڈولفنز کے تخیلاتی سمندری آباواجداد بھی دیکھنے کو ملتے ہیں جبکہ ایک معدوم ہو جانے والا دیو ہیکل پرندہ موا، اور ڈائینوسارز کے وقت کا واحد زندہ بچ جانے والا ٹاٹارہ بھی دکھائی دیتا ہے۔

یہاں مجھے ان ماوری قبائل کی کہانیوں کے بارے میں بھی علم ہوا جو روایتی خوارک کے حصول کے مقصد سے کوریو بے پہنچے تھے۔

ان کے اس وقت کے کیمپس کی باقیات کی نشانیاں آج بھی یہاں نظر آ جاتی ہیں۔

1980 میں اس علاقے کو سائنسی ریزرو قرار دیا گیا تھا تاکہ اس پر تحقیق کی جا سکے۔ اس سے قبل 1928 میں بھی ان جنگلات کو محفوظ بنانے کے لیے اقدامات اٹھائے گئے تھے۔

دنیا کے سٹیج پر کیوریو بے کی اہمیت کے بارے میں پول کہتے ہیں کہ 'ایسا کوئی اور جنگل موجود نہیں جہاں پتھر ہو جانے والے درختوں کے اتنے موجود ہوں۔ اس حساب سے یہ بہت منفرد ہے۔ ساتھ ہی اس سے قریب ہی ایک زندہ جنگل کی شکل میں اس کے رشتہ داروں کی موجودگی بھی اس کو اہم بناتی ہے۔'

شام ڈھلی تو میں بھی واپسی کے راستے پر گامزن ہوا۔ میں یہاں سمندر، ریت، غار اور دنیا کے ایک کونے پر پتھر ہو جانے والا جنگل دیکھنے آیا تھا۔ اور یہاں آ کر میں نے ایک ملک کے جائے پیدائش پر اپنی ہتھیلی رکھی۔

سورس : بی بی سی اردو

Sahara Yojna turn out to be a big relief for Sunny and Ankur

A mere thought of the agony of a helpless person lying on the bed since childhood due to the incurable disease like Muscular Dystrophy and a young man who lost his eyesight due to a serious disease, can stir everyone's mind. 37-year-old Sunny and 31-year-old Ankur Soni of Majhot village of Hamirpur have been suffering from such pain and agony for years and both of them are completely dependent on their families. In spite of spending lakhs of rupees on treatment, their conditions could not improve and this has completely broken their families both emotionally and financially as well.

Realizing the pain and sufferings of such helpless people and their family members, the Himachal Pradesh government has started Sahara Yojna in the year 2019 and this scheme is turning out to be a big relief for thousands of people who are bed ridden for years due to incurable diseases or the serious accidents. The State government has made a provision of Rs. 3000 for such persons every month under Sahara Yojna.This scheme is proving to be a big help for the families of Sunny and Ankur. Both of them are now getting an amount of Rs. 3000 per month under Sahara Yojna. Actually, 37 years old Sunny had been bed-ridden since his childhood due a serious disease muscular dystrophy. According to Sunny's mother Raj Kumari, they have spent lakhs of rupees on treatment but his condition did not improve. The financial condition of the family also kept deteriorating. Their condition worsened further after the untimely death of Sunny's father due to Corona last year. There was not any hope for the family.

Then one day came a glimmer of hope from the State government in the form of Sahara Yojna. Now, bed ridden Sunny is getting Rs. 3000 every month under this scheme and his family is able to take better care of him. Expressing gratitude to the state government and especially to the Chief Minister Jai Ram Thakur, Raj Kumari says that an amount of Rs. 3000 received under Sahara Yojna, is proving to be a great help for them.

Similarly, 31 year old Ankur Soni of the same village Majhot, is also getting Rs 3000 per month under Sahara Yojana. Actually, Ankur had been suffering from a serious disease since childhood. He has gradually lost his eye sight and now he is completely blind. Parents have spent lakhs of rupees for the treatment of Ankur but everything went in vain. After the complete loss of eyesight, Ankur and his family members were completely broken. In such circumstances, the Sahara Yojna of the State government came as a big relief to Ankur. Thanking the State government, Ankur says that the Chief Minister Jai Ram Thakur has taken a great step by starting schemes like Sahara Yojna for the people who are totally helpless and bed ridden for years due to serious ailment or any serious accident etc.

Like Ankur and Sunny, more than twenty thousand helpless and bed ridden people in the state are getting the benefit of Sahara Yojana. This scheme has brought great relief to the people, who have been disabled due to limbo, muscular dystrophy, Parkinson, cancer, hemophilia, thalassemia, severe kidney disease and other diseases or due to serious accidents. So far, an amount of about Rs 80 crore has been given to the eligible people of this scheme.

स्वयं सहायता समूह संचालित करेंगे शहर के बुक कैफे : सुरेश भारद्वाज

बाख़बर न्यूज
शिमला . बाख़बर कनेक्ट

शहरी विकास मंत्री सुरेश भारद्वाज ने कहा कि स्वयं सहायता समूह की महिलाओं द्वारा बुक कैफे का संचालन आत्मनिर्भरता के एक नए मॉडल की शुरुआत है। इससे न केवल स्वयं सहायता समूहों को अपने उत्पादों के लिए बाजार मिलेगा बल्कि शहरवासियों को पढ़ने-लिखने के लिए एक बेहतर स्थान भी उपलब्ध होगा। सुरेश भारद्वाज ने कहा कि दीनदयाल अंत्योदय योजना-राष्ट्रीय शहरी आजीविका मिशन (डीएवाए-एनयूएलएम) के तहत स्वयं सहायता समूहों से जुड़ी महिलाएं शिमला के नवनिर्मित बुक कैफे संचालित करेंगी। शहरी विकास मंत्री चौड़ा मैदान स्थित बुक कैफे के माध्यम से 17 सितंबर, 2022 को स्वयं सहायता समूह द्वारा संचालन के मॉडल का शुभारम्भ करेंगे। शहरी विकास मंत्री ने कहा कि शिमला शहर में स्मार्ट सिटी मिशन के तहत बुक कैफे का निर्माण किया गया है। उन्होंने कहा ''चौड़ा मैदान और छोटा शिमला में हाल ही में बुक कैफे का उद्घाटन भी किया गया है जबकि संजौली तथा न्यू शिमला में काम चल रहा है। इन बुक कैफे को चलाने के लिए विभिन्न मॉडलों का अध्ययन किया और यह निर्धारित किया गया कि दीनदयाल अंत्योदय योजना-राष्ट्रीय शहरी आजीविका मिशन के तहत पंजीकृत स्वयं सहायता समूहों से जुड़ी महिलाएं इन बुक कैफे को चलाएंगी।''

मालिक, मुद्रक, प्रकाशक **हेमराज हरनोट** द्वारा वायलट हिल, जाखू, शिमला-1 से प्रकाशित एवं **दुर्गा पेपर कन्वर्टरज़**, कांशी भवन, तारादेवी, शिमला-10, जिला शिमला (हि.प्र.) से मुद्रित। सम्पादक : **हेमराज हरनोट।**
बाख़बर कनेक्ट से सम्बन्धित सभी मामलों का निपटारा न्यायिक अधिकार क्षेत्र शिमला में ही होगा। फोन नं. 094185-88654, email: bakhabarconnect@gmail.com, Post Box No. 86, Shimla-1, H.P.

आज़ादी का अमृत महोत्सव

मेरा हिमाचल - मेरा गौरव 75 साल 1948 - 2022

हिमाचल व केंद्र की डबल इंजन सरकार ला रही सुखद बदलाव

मुख्यमंत्री शगुन योजना

1 अप्रैल, 2021 से आरम्भ

निर्धन परिवारों की कन्याओं के विवाह के लिए ₹31,000 की दी जा रही सहायता

योजना का लाभ लेने के लिए शादी से दो महीने पहले से लेकर शादी के 6 महीने बाद तक कर सकते हैं आवेदन। धनराशि सीधे आवेदक के बैंक खाते में करवाई जाती है जमा

योजना का लाभ लेने के लिए नज़दीकी आंगनबाड़ी कार्यकर्ता, बाल विकास परियोजना कार्यालय अथवा ज़िला कार्यक्रम अधिकारी कार्यालय में कर सकते हैं आवेदन

शगुन की राशि बेटी को हिमाचल से बाहर शादी करने पर भी दी जाती है

6626 व्यक्ति लाभान्वित, ₹17.42 करोड़ खर्च

सूचना एवं जन सम्पर्क विभाग, हिमाचल प्रदेश सरकार

www.himachalpr.gov.in HimachalPradeshGovtIPRDept DPR Himachal dprhp